अव्यक्त इशारे
जमा का खाता बढ़ाओ, बचत की स्कीम बनाओ

1) जैसे 'याद' से मन्सा की शक्ति जमा करते हो, साइलेन्स में बैठते हो तो 'संकल्प-शक्ति' जमा होती है। ऐसे वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को भी जमा करने की स्कीम बनाओ। बोल में जमा करने का साधन है – 'कम बोलो और मीठा बोलो, स्वमान से बोलो'। ऐसे ही कर्मणा सेवा में जमा का खाता तब बढ़ता है जब कोई भी कर्म योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में स्थित रहकर करते हो।
2) कई बच्चे भोले बनकर चेकिंग करते हैं सोचते हैं कि सारे दिन में कोई विशेष गलती तो की नहीं, बुरा सोचा नहीं, बुरा बोला नहीं। लेकिन यह चेक नहीं करते कि दिव्य वा अलौकिक कर्म किया? वर्तमान का दिव्य संकल्प वा दिव्य बोल और कर्म भविष्य के लिए जमा करता है। तो इसमें सिर्फ खुश नहीं होना कि हमने वेस्ट तो किया नहीं लेकिन बेस्ट कितना बनाया? दुःख नहीं दिया यह तो ठीक लेकिन सुख देने से जमा होता है, तो सुख कितनों को दिया? ऐसी महीन चेकिंग करो।
3) अपने सब खाते चेक करो - तन से कितना जमा किया? मन के दिव्य संकल्प से कितना जमा किया? और धन को श्रीमत प्रमाण श्रेष्ठ कार्य में लगाकर कितना जमा किया? जमा के खाते तरफ विशेष अटेन्शन दो। अगर जमा किया हुआ है तो समय पर दूसरों को दे सकेंगे। नहीं है तो समय पर धोखा खा लेंगे। धोखा खाना अर्थात् दुःख की प्राप्ति होना।
4) जमा का खाता बहुत सहज बढ़ाने की गोल्डन चाबी है - सेवा करने के समय अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति और निर्मान भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव हो। अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज इससे आत्माओं की भावनायें पूर्ण हो जाती हैं।
5) यह संगमयुग जमा करने का युग है इसलिए अपने जमा के खाते चेक करो। चेकर भी बनो, मेकर भी बनो क्योंकि समय की समीपता के नज़ारे देख रहे हो और सभी का वायदा है कि हम समान बनेंगे। तो ब्रह्मा बाप के समान बनने के लिए जमा का खाता भरपूर चाहिए। अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति के बचत की योजना बनाकर बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ।
6) मेरा-मेरा कहने से सब कुछ गँवाते आये, अब तेरा तेरा कहो तो जमा होता जायेगा। वास्तव में यहाँ खर्च करना भी जमा करना है, जितना खर्चा करते हो अर्थात् दूसरों को देते हो उतना पदमगुणा बनता है। एक देना और पदम लेना। एक सेकण्ड की शक्तिशाली याद भी पदमों की कमाई जमा करा देती है।
7) समय और शक्ति की बचत करने के लिए हर समय बापदादा के संस्कारों से मेल करते चलो। जो साकार के संकल्प वा संस्कार रहे हैं उनसे मिलाते चलो तो समय नष्ट नहीं होगा। फौरन निर्णय कर लेंगे कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। इससे ही समय की बचत होगी और बुद्धि की शक्ति जो नष्ट होती है, उसकी भी बचत होगी।
8) जैसे स्थूल कारोबार का प्रोग्राम बनाते हो वैसे अपनी बुद्धि की कारोबार का प्रोग्राम बनाओ, क्या-क्या कार्य बुद्धि द्वारा करना है इसका प्रोग्राम बनाने के अभ्यासी बनो तो हर कार्य समय

पर सफल होगा। सदैव अन्डरग्राउन्ड अर्थात् अन्तर्मुखी बन हर कार्य करो तो समय और संकल्पों की बचत होगी, सफलता अधिक मिलेगी।

9) जैसे वह गवर्नमेन्ट भी आजकल बचत की स्कीम बनाती है। तो ऑलमाइटी गवर्नमेन्ट सब बच्चों को ऑर्डर करती है कि अब बचत की स्कीम बनाओ। खर्चे को फुल स्टॉप लगाओ। अभी अपने प्रति अपनी शक्तियां खर्च नहीं करो। अखुट खजाने के मालिक के बालक हो, इस नशे में रहो तो शक्तियां उधार नहीं लेनी पड़ेगी।

10) बचत करने का सहज और श्रेष्ठ तरीका - अपनी बुद्धि का, वाणी का और कर्म का, हर समय का प्रोग्राम फिक्स करो। जैसे बजट बनाते हैं तो उसमें फिक्स करते हैं कि इतना खर्चा इस पर करेंगे। उस अनुसार ही फिर खर्चे को चलाते हैं तब बजट प्रमाण कार्य सफल हो सकता है। तो बजट बनाना अर्थात् अमृतवेले उठकर रोज़ अपनी बुद्धि द्वारा, वाणी द्वारा और कर्म द्वारा क्या-क्या करना है, उन सभी को फिक्स करो। रोज़ की डायरी बनाओ और उसी प्रमाण कार्य करो।

11) अब आप श्रेष्ठ आत्माओं को विश्व कल्याणकारी बनना है। इसके लिए समय वा शक्तियां न सिर्फ अपने प्रति लेकिन अनेक आत्माओं की सेवा प्रति भी स्टॉक जमा होना चाहिए। अगर वेस्ट होता रहेगा तो स्वयं को भी भरपूर अनुभव नहीं करेंगे इसलिए अपने प्रति आवश्यक समय वा शक्तियों में से एकॉनामी का लक्ष्य रखते हुए बचत करो क्योंकि विश्व की सर्व आत्मायें आप श्रेष्ठ आत्माओं का परिवार है। जितना बड़ा परिवार होता है उतना ही एकॉनामी का ख्याल रखा जाता है।

12) जमा का खाता इतना भरपूर हो जो 21 पीढ़ी सदा सम्पन्न रहें, आपकी वंशावली भी मालामाल रहे। न सिर्फ 21 जन्म लेकिन द्वापर में भी भक्त आत्मा होने के कारण कोई कमी नहीं होगी। इतना धन द्वापर में भी रहता है जो दान-पुण्य अच्छी तरह से कर सकते हो। कलियुग के अन्त में भी देखो, भले काला धन नहीं है लेकिन दाल-रोटी तो है ना! तो इस समय जो कमाई जमा की है, उसी प्रमाण अन्तिम जन्म में दाल-रोटी खाते हो।

13) आजकल के जमाने में वेस्ट से बेस्ट बनाते हैं। वेस्ट को ही बचाते हैं। तो आप सब भी बचत का खाता सदा स्मृति में रखो। बजट बनाओ। संकल्प शक्ति, वाणी की शक्ति, कर्म की शक्ति, समय की शक्ति कैसे और कहाँ कार्य में लगानी है। ऐसे न हो यह सब शक्तियाँ व्यर्थ चली जाएं। संकल्प भी व्यर्थ वा साधारण न हो, उन्हें भी बचाओ। सदा समर्थ संकल्प करो।

14) सर्व शक्तियों की बचत के लिए सारे दिन का चार्ट बनाओ। जितना हर शक्ति को कार्य में लगायेंगे उतना शक्ति बढ़ेगी। साधारण सेवा की दिनचर्या वा साधारण प्रवृत्ति की दिनचर्या, इसको बचत का खाता जमा होना नहीं कहेंगे। उल्टा बोल नहीं बोला, लेकिन ऐसा बोल बोला जो किसी नाउम्मींद को उम्मीदवार बनाया, हिम्मतहीन को हिम्मतवान बनाया? खुशी के उमंग, उत्साह में किसको लाया? यही है जमा करना अर्थात् बचत करना।

15) ईश्वरीय बजट ऐसा बनाओ जो विश्व की हर आत्मा कुछ न कुछ प्राप्त करके आपके गुणगान करे। सभी को कुछ न कुछ देना ही है। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवनमुक्ति दो। ईश्वरीय बजट अर्थात् सर्व आत्मायें, प्रकृति सहित सुखी वा शान्त बन जावें।

16) सर्व खजानों की बचत करने के लिए सहनशील बनो। सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान-योग के सार में स्थित हो विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को सार में ले आती है। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं अर्थात् ज्यादा यूज़ होती हैं। ऐसे विस्तार है लम्बा रास्ता पार करना और सार है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन शार्टकट करने वाले

समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश व दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं।

17) सारे दिन में मन्सा, वाचा, कर्मणा में खर्चे और बचत का पोतामेल रखो। अब विशेष वाचा और कर्मणा - इन दोनों शक्तियों को जमा करने की स्कीम बनाओ। मूल है मन्सा, लेकिन इसके साथ-साथ विशेष वाचा और कर्मणा में बचत करो क्योंकि मन्सा फिर भी गुप्त है, और यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले हैं।

18) अभी फाइनल समाप्ति का बिगुल नहीं बजा है, इसलिए उड़ो और औरों को भी उड़ाते चलो। इसकी विधि है वेस्ट अर्थात् व्यर्थ को बचाओ। बचत का खाता, जमा का खाता बढ़ाते चलो क्योंकि 63 जन्म से सभी खाते व्यर्थ गंवाकर खत्म कर दिया है। श्वांस का, संकल्प का, समय का, गुणों का, शक्तियों का, ज्ञान का... सब खजाने गंवाये हैं। कितने खाते खाली हो गये! अभी इन सभी खातों को जमा करो।

19) विनाशी खजाने खर्च करने से कम होते हैं, खुटते हैं और यह सब खजाने जितना स्व के प्रति और औरों के प्रति शुभ वृत्ति से कार्य में लगायेंगे, उतना जमा होता जायेगा, बढ़ता जायेगा। यहाँ खजानों को कार्य में लगाना, यही जमा करने की विधि है। वहाँ रखना जमा करने की विधि है और यहाँ लगाना जमा करने की विधि है।

20) समय को स्वयं प्रति या औरों प्रति शुभ कार्य में लगाओ तो जमा होता जायेगा। ज्ञान को कार्य में लगाओ। ऐसे गुणों को, शक्तियों को जितना लगायेंगे उतना बढ़ेगा। यह नहीं सोचना-जैसे वह लॉकर में रख देते हैं और समझते हैं बहुत जमा है, ऐसे आप भी सोचो मेरे बुद्धि में ज्ञान बहुत है, गुण भी मेरे में बहुत हैं, शक्तियाँ भी बहुत हैं। लॉकप करके नहीं रखो, यूज़ करो।

21) जैसे भक्ति मार्ग में नियम है कि जितना भी आपके पास स्थूल धन है तो उसके लिये कहते हैं - दान करो, सफल करो तो बढ़ता जायेगा। सफल करने के लिए भक्ति में भी कितना उमंग-उत्साह बढ़ाते हैं। तो आप भी चेक करो कि सर्व खजाने सफल कितना किये? खजाने खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति ज्यादा। जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो। जिसको साकार में भी ब्रह्मा बाप कहते थे कम खर्चा बाला नशीन। खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो। इससे जो समय, संकल्प की बचत होगी वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे।

22) जैसे दान पुण्य वही कर सकते हैं जिनके पास धन की बचत होती है। अगर अपने प्रति लगाने जितना ही कमाया और खाया तो दान पुण्य नहीं कर सकेंगे। तो कम समय में रिजल्ट ज्यादा, कम संकल्प से अनुभूति ज्यादा हो तब ही हर खजाना औरों के प्रति यूज कर सकेंगे। ऐसे ही वाणी और कर्म, कम खर्चा और सफलता ज्यादा तब ही कमाल गाई जायेगी।

23) अगर अटेन्शन दे करके कोई भी चीज़ की बचत करते हो तो चाहे बचत थोड़ी हो लेकिन बचत की खुशी एक्स्ट्रा होती है। अगर 10 पाउण्ड या डॉलर खर्च होना है और आपने एक पाउण्ड या डॉलर बचा लिया तो एक पाउण्ड की बड़ी खुशी होगी कि बचाकर आये हैं।

24) पहले तो अपने संकल्पों की बचत करो, वेस्ट के बजाय बेस्ट के खाते में जमा करो और दूसरा अगर बचत नहीं कर सकते हो तो व्यर्थ को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करो। यदि कन्ट्रोल नहीं हो सकता है तो परिवर्तन कर उसकी रफ्तार को चेंज करो। नहीं तो आदत पड़ जाती है। 5 मिनट भी वेस्ट से बेस्ट में जमा हो गये तो 2 घण्टे में 5-5 मिनट भी कितने हो जायेंगे? और खुशी कितनी

होगी? और जितना श्रेष्ठ संकल्पों का खाता जमा होगा तो समय पर जमा का खाता काम में आयेगा।

25) जैसे स्थूल धन में अगर जमा नहीं होता है तो समय पर धोखा खा लेते हैं। ऐसे यहाँ भी अगर खजाने जमा नहीं हैं तो जब कोई बड़ी परीक्षा आयेगी तो मन और बुद्धि खाली-खाली लगेगी, शक्ति नहीं होगी इसलिए जमा करना सीखो। श्रेष्ठ संकल्पों का खाता भरपूर हो। खाली-खाली नहीं हो। यही श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना श्रेष्ठ प्रालब्ध का आधार बनेगा।

26) रोज़ रात को अपने इन खजानों के बचत का पोतामेल चेक करो। कितने संकल्प, कितना समय बेस्ट के खाते में जमा किया? गुण और शक्तियों से कितना श्रेष्ठ कार्य किया? तो संकल्प, समय, गुण, शक्ति इसका पोतामेल रोज़ रात्रि को चेक करो फिर टोटल करो कितना बचत का खाता हुआ? यही बचत स्वयं को भी सहयोग देती रहेगी और औरों को भी देगी। जब बचत के ऊपर अटेन्शन देंगे तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

27) सदा चेक करो कि आज के दिन मन्सा द्वारा या कोई भी सेवा द्वारा कितने पुण्य जमा किये? और पुण्य के आधार से छोटी-छोटी बातें कितनी समाप्त हो गई? खर्च कितना हुआ और बचत कितनी हुई? अगर बार-बार विघ्न आते हैं और उसको मिटाने के लिए गुण और शक्तियों को खर्च करते हैं तो वह कितना हुआ? और योगयुक्त अवस्था से बाप को साथी बनाकर सेवा करने में पुण्य का खाता कितना जमा हुआ? ऐसी चेकिंग की मशीनरी दिल के आफिस में सेट कर चेक करते हो तो चेंज हो जायेंगे।

28) जो भी श्रेष्ठ कार्य करना है, वह अब करना है। हर कार्य में हर समय याद रखो कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जिसको यह स्मृति में रहता है वह कभी भी समय, संकल्प वा कर्म वेस्ट होने नहीं देंगे, सदा जमा करते रहेंगे। तो हर सेकण्ड के हर संकल्प का महत्व जानते हुए जमा का खाता भरपूर करो तब 21 जन्म के लिए अपना खाता श्रेष्ठ बना सकेंगे।

29) जिनका सेवाकेन्द्र और सेवा निर्विघ्न हैं, जो स्वभाव-संस्कार के टक्कर से मुक्त हैं, उनकी सेवा का खाता जमा होता है। अगर कोई सेन्टर भी बढ़ाता जाये और माया भी बढ़ाता जाये तो ऐसी सेवा बाप के रजिस्टर में जमा नहीं होती है। कई सोचते हैं हम तो बहुत सेवा कर रहे हैं, नींद भी नहीं करते, खाना भी एक बार बनाके खा लेते - इतना बिजी रहते! लेकिन सेवा के साथ अगर माया में भी बिजी हैं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ, इसने क्यों किया, मैंने क्यों नहीं किया, मेरा हक, तेरा हक.... ऐसी सेवा का खाता जमा नहीं होता।

30) वाणी में बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति तब आयेगी जब इसे व्यर्थ जाने से बचायेंगे। अभी तक साधारण बोल ज्यादा हैं इसलिए आवाज बुलन्द होने में देरी हो रही है। जैसे ब्रह्मा बाप के बोल - फरिश्तों के बोल थे, कम बोल और मधुर बोल थे। ऐसे यथार्थ बोल बोलो। कारोबार के लिए बोलना पड़ता है लेकिन वह भी लम्बा नहीं करो। अभी शक्ति को जमा करो तब वाणी में जौहर आयेगा।

31) अब अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। तो आपका पुरुषार्थ स्वत: ही जमा होता जायेगा। दूसरों को सहयोग देना अर्थात् अपना जमा करना। अभी ऐसी लहर फैलाओ - देना है, देना है, देना ही देना है। देने वाले को सबके दिल की दुआएं मिलती हैं। जिसने हर एक के दिल की दुआयें जमा की है उनका पुरुषार्थ स्वतः सहज हो जाता है। जैसे हर चीज़ का स्टॉक आवश्यकता प्रमाण जमा करते हो, ऐसे अभी यह स्टॉक जमा करने की चेकिंग करनी है, साथ-साथ अमृतवेले उठकर अपने को अटेन्शन के पट्टे पर चलाना तो पट्टे पर गाड़ी ठीक चलती रहेगी।